कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

॥ कीर्ति करुणाशतक ॥

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीदीनानाथाय नमः

श्रीगुरूगोविन्द वंदना

गुरूवंदत पादारविन्द भवउधार की ।
करो वाँच्छना सुपूर्ण कीर्ति शर्ण दीनानाथ ॥ १ ।
हरे माधवमुकुन्द कृष्ण चरणनन प्रणाम ।
मिलो कीर्ति प्रेम नेम सुफल हेत दीनानाथ ॥ २ ।

॥ अर्पण ॥

करो स्वीकृत भगवान कृष्ण दीन हेतकार ।
कीर्ति करुणाशतक चर्णधार दीनानाथ ॥ ३ ।

॥ कीर्ति करुणाशतक प्रारंभः ॥

अपने भारत में आवो सुनों दीनानाथ।
देके दर्शन अनाथों को कर दो सनाथ ॥ ४ ॥
नहीं छुपने से दुखियों क होगा सम्हार।
आके देखो तो अपना वतन दीनानाथ ॥ ५ ॥
मेरी आँखे बिछी हैं तेरी राह पै।
दिन गुजरते नहीं क्यूँ हो चुप दीनानाथ ॥ ६ ॥
कुछ तो सूझे न दुखियों को भारी किनार।
हाँथ गहलो पड़ी सागर में हे दीनानाथ ॥ ७ ॥
आवो आवो हरे येक तूहीं आधार।
जन पुकारें तुम्हीं हो प्रभू दीनानाथ ॥ ८ ॥
तुम तो युग युग में सन्तों के हेती रहे।
क्यों न आये हरे दीनों के दीनानाथ ॥ ९ ॥
दीन वंधू तेरा नाम अविचल सदा।
फिर कहो तो भला रूठे क्यूँ दीनानाथ ॥ १० ॥

हम तो तेरे ही दर के भिखारी सदा।
चाह चर्णों की रखते अडे दीनानाथ ॥ ११ ॥
इन्तजारी में हैं प्राण अटके हुये।
मेरे जीवन चले आवो हे दीनानाथ ॥ १२ ॥
तुम्हें गज ने पुकारा बड़े कष्ट में।
खुले पैरों थे दौड़े द्रवे दीनानाथ ॥ १३ ॥
त्योंहीं दुःख के समुन्दर से रक्षो हमें।
हम पुकारें सभी दीन हे दीनानाथ ॥ १४ ॥
तुम्हें टेर्यो प्रहलाद दुःख विनासी प्रभो।
निकलि खम्हें से आये नृसिंह दीनानाथ ॥ १५ ॥
महा खम्भ अनाचार का मुरार है यहाँ।
प्रगटि आवो दीन हेत की दयाल दीनानाथ ॥ १६ ॥
तुम्हीं वसुधा उवार हेत बनि गये वराह।
हरो फेर अनाचार मेंदिनीक्र दीनानाथ ॥ १७ ॥
मीन करुणा निधान सत्य व्रत नृप हितू।

प्रलै की व्यथा निवारि शर्णादीन दीनानाथ ॥ १८ ॥
हरे वामन महेन्द्र हेत विक्रम भगवान ।
दास वलि भये सुरेन्द्र सुयस दीन दीनानाथ ॥ १९ ॥
मथ्यो सुधा हेत क्षीर सिन्धु कच्छ पच्छ स्वच्छ ।
महामाया मोहनियाँ बने दीनानाथ ॥ २० ॥
बाल ध्रुव के भगवान विष्णु दाया मई ।
सदा निर्वल सहायक तुम्हीं दीनानाथ ॥ २१ ॥
पर्शराम विजैवान गर्व खराडी प्रभो ।
तुम्हीं युग युग में दीनों के थे दीनानाथ ॥ २२ ॥
महाराजा अयोध्या के श्रीरामजी ।
तेरी महिमा अपार दीनबंधु दीनानाथ ॥ २३ ॥
मारि असुरों को संतों की रक्षाकरी ।
ऐसी पावन पवित्र शर्णा राम दीनानाथ ॥ २४ ॥
जन्म मथुरा वसुदेव पिता मात देवकी ।
कृष्णाचन्द्र पारब्रह्म जन्म नाम दीनानाथ ॥ २५ ॥

छिप्र गोकुल में जाय नंदलाल कहाये ।
मात यशुदा के बालक कन्हइया दीनानाथ ॥ २६ ॥
मारि दैत्यन समूँह मोंद स्वजनन भरी ।
धेनु वत्स ग्वाल हेत की गोपाल दीनानाथ ॥ २७ ॥
हरे मोहन मुकुन्द शर्णा तेरी बड़ी ।
हम तो आश्रित पड़ी तेरैं द्वार दीनानाथ ॥ २८ ॥
आवो राधा के प्रियतम पुकारें तुम्हें ।
एक विश्वपती तूही हरे दीनानाथ ॥ २९ ॥
कौन युक्ती से हम आवाहन करें ।
तुम्हीं निर्वल के धन बल प्राण दीनानाथ ॥ ३० ॥
तूहीं राधा के साथ तूहीं गोपिन के नाथ ।
तेरी दीनन के साथ गान गाथ दीनानाथ ॥ ३१ ॥
हम तो तड़पें हैं तसैं दरश को तेरे ।
कुछ सुनों तो हमारी प्रभू दीनानाथ ॥ ३२ ॥
आवो देखो तो आश्रित की बिपदा हरी ।

हैं थके दृग विलोकें गली दीनानाथ ॥ ३३ ॥
नहीं जानी हमारी तुम्हारी गली ।
पूँछूँ कासो बतावो भला दीनानाथ ॥ ३४ ॥
तुम्हें श्रुति वेद विधि ठीक जानें नहीं ।
सूक्ष्म अद्भुत रमेशू हरे दीनानाथ ॥ ३५ ॥
अब तो मुश्किल है दीनों की गाढी घडी ।
बिन पधारे तेरे दीन के दीनानाथ ॥ ३६ ॥
बुद्ध अवतार भगवन का मायामई ।
कौनी विधि से शरण प्राप्त हो दीनानाथ ॥ ३७ ॥
हमपै माधव मुरारी दया तो करो ।
दर्श आके दिखावो प्रभू दीनानाथ ॥ ३८ ॥
प्रभू दाया करो कृष्ण जीवन तुम्हीं ।
हम असे कष्ट में अब मिलो दीनानाथ ॥ ३९ ॥
तूहीं अखिलेश नारायण, त्रैगुणी ।
होतो घटघट के व्यापी मेरे दीनानाथ ॥ ४० ॥

बाढी माया जगत के हितू हो रमेश।
चराचर के हो स्वामी हरे दीनानाथ ॥ ४१ ॥
दाया दृष्टी प्रकासो सुनो तो मुरार।
हम गरीबों के रक्षक तुम्हीं दीनानाथ ॥ ४२ ॥
शर्णा अपनी में भर्ती हमारी करो।
हम व्यथित घोर अघ से हैं हे दीनानाथ ॥ ४३ ॥
तुमतो करुणा के सागर सदा से रहे।
अब छुपे क्यूँ मेरी बार हे दीनानाथ ॥ ४४ ॥
हमको क्षण भर सबर ना तुम्हारे बिना।
आवो हरबर खबर लो मेरी दीनानाथ ॥ ४५ ॥
हम तो आश्रित सदा से तुम्हारे विभो।
देके दर्शन हरो कष्ट हे दीनानाथ ॥ ४६ ॥
तुमतो कर्ता के कर्तार देवेश हो।
शेषशिव वेद तुमसे भृजे दीनानाथ ॥ ४७ ॥
फिर कहाँ हो सुलभ हम गरीबोंको यूँ।

जबकि लीला अभेदी तेरी दीनानाथ ॥ ४८ ॥
भारी महिमा के ईश्वर सुनो तो सही।
दुखी दीनन खबर लो प्रभु दीनानाथ ॥ ४९ ॥
गृद्ध गणिका अजामिल पै दाया करी।
ग्राह दुखसे उबार्‍यो तुम्हीं दीनानाथ ॥ ५० ॥
ऐसे स्वामी दयालु कि चाहूँ शरण।
जो द्रवे दीनजन गनपै थे दीनानाथ ॥ ५१ ॥
अबतो दीनों की भारी बढ़ी मण्डली।
आके देखो तो भारत को ऐ दीनानाथ ॥ ५२ ॥
क्या दशा हो रही है गरीबों की याँ।
रंग विरंगे चुनावों में आ दीनानाथ ॥ ५३ ॥
अपनो कीरति की अर्जी पै मर्जी करो।
वाँच्छा याही है आवो मेरे दीनानाथ ॥ ५४ ॥
महा वसुधा मलिन बिन पधारे हरे।
धेनु जन द्विज हितैषी हो आ दीनानाथ ॥ ५५ ॥

आवो क्षणहुँ चैन है न हमें दर्श बिन तेरे।
मेरे जीवन आधार हो तुम्हीं दीनानाथ ॥ ५६ ॥
ऐसी भारी विपत्ति कहो कासूँ कहूँ।
यहाँ अति अनाचार बढ़ रहा है दीनानाथ ॥ ५७ ॥
एक तूहीं सामर्थ दुक्ख भंजन सर्वेश।
दया धारोपधारो कृपालु दीनानाथ ॥ ५८ ॥
नहीं हूवै रहा सम्हार वह रही विषै बयार।
सूझना पड़े किनार धार तीव्र दीनानाथ ॥ ५९ ॥
यहाँ ह्वै रही अनीत हमें कौन उबारे।
तुमतो दीनन गोहार द्रवण हार दीनानाथ ॥ ६० ॥
यहाँ है प्रपंच घोर ओर छोर तो नहीं।
कहीं है नहीं निवाह शीघ्र आव दीनानाथ ॥ ६१ ॥
महा महिमा दर्वार की सुनी हैं दीनवन्धु।
तासूँ शर्ण शर्ण शर्ण शर्ण तेरी दीनानाथ ॥ ६२ ॥
वेद शिव विरञ्चि शेष तुम्हें जानें नहीं।

महा दीन हीन अवल शर्ण तेरी दीनानाथ ॥ ६३ ॥

शेष शयनी प्रभो सर्व विश्व के पती।

दया दृष्टि की कृपा चहूँ दयालु दीनानाथ ॥ ६४ ॥

त्रिधी सत्य कृत्य की हूँ न जानूं कछू।

शीश अघ अपार धार पडी द्वार दीनानाथ ॥ ६५ ॥

मिटे भ्रम भवाब्धि व्याधि करो सोई प्रभू।

होतो जीवन रखवार हे दयालु दीनानाथ ॥ ६६ ॥

काहे हो रही विलम्ब हे अवलम्बी विभो।

दीननिशदिननिहारें बाट आव दीनानाथ ॥६७॥

अत्ति सौम्यगात नाम वाँच्छ पूरणकारी।

गाय गाय सोई नाम जन पुकारें दीनानाथ ॥६८॥

महाँ महिमा तुम्हार हे अनंत रमाकन्त।

साँचे आवो सम्हालो जाने जन दीनानाथ ॥६९॥

विना दाया के कष्टित पुकारें तुम्हें।

मेंटि सर्व दुक्ख शर्ण राख मेरे दीनानाथ ॥७०॥

दया युगै युगकरी तो मेरी वार हूँ करो।
करुणा वार स्त्रै स्वभाव है तुम्हार दीनानाथ ॥७१॥
हमें हर प्रकार येकही है आस तुम्हारी।
हो तो सर्व गुणागार हे सरकार दीनानाथ ॥७२॥
महाँ विक्रमी अनंत तुम्ही त्रिभुवन पती।
करि कटाक्ष कष्ट टार सर्व हे दीनानाथ ॥७३॥
हमें चैन ही नहीं है तुम्हारे विना।
आवो सर्व हेतकार अखिल ईश दीनानाथ ॥७४॥
नहीं आने का हेत कहो क्या है गोविन्द।
पडे अघ के अभावकाट फन्द दीनानाथ ॥७५॥
तूँ विलम्ब ना करो कृपाल प्राण विकल है।
सर्व जीवन आधार हो रमेश दीनानाथ ॥७६॥
विलग दुखमहान कब तक सहें हे दीनबन्धु।
तुम्हें ढूँढे कहाँ हम अवस दीनानाथ ॥७७॥
वँधे बन्धन कठिन हैं अनाचार के।

ना सहइया कोई बिन तेरे दीनानाथ ॥७८॥
ऐसी जालिम जंजीरों से जकड़े पड़े।
अथा कैसे निभावे सुकृत दीनानाथ ॥७६॥
हरे त्रिभुवन के ईश हरो भीति सर्व की।
बिलखि दीन जन रहे हैं देहु शर्ण दीनानाथ ॥८०॥
आवो कष्ट से बचावो हमें कृष्ण मुरारी।
हम नहीं तो सह सकें ब्यथा कराल दीनानाथ ॥८१॥
आना ही मुनासिब है हेतकार बिहारी।
दर्श दे मिटावो सर्व कष्ट मेरे दीनानाथ ॥८२॥
प्रभो करुणा निधान कहाते हो जगन्नाथ।
स्वै स्वभाव राखि शर्ण भीति काट दीनानाथ ॥८३॥
प्रबल आयुध अर जोर चक्रधारी रमेशू।
गदा नंदक डारयो कहाँ हो सुस्त दीनानाथ ॥८४॥
नाहिं सुन रहे पुकार ताहि सूँअ धीर हूँ।
श्रवण धारो गोहार तो पधारो दीनानाथ ॥८५॥

हमें दुक्ख में डुवोये प्रभू सोय रहे क्या।
जगो शेष शैन वाले दुख विनाशो दीनानाथ ॥८६॥
दुखी तड़पें मझदार हे दयालू मुरार।
आके करदो किनार गह के हाँथ दीनानाथ ॥८७॥
नाहिं कीजे विलम्ब प्राण मेरे घुट रहे।
आवो दीन हितू साँचे सहइयाँ दीनानाथ ॥८८॥
मानो साँची गोपाल अत्ति है हमें कसाल।
आवो आवो साँचे स्वामी दयालु दीनानाथ ॥८९॥
अत्ति महिमा तुम्हार वेद कर रहे पुकार।
तुम्हीं त्रिभुवन आधार शर्ण राख दीनानाथ ॥९०॥
तूहीं रच्छ्यो सुपच्छ सर्व युगंन में हरी।
पाप मोर जोर वार तार त्राहि दीनानाथ ॥९१॥
करो पाप मर्दि छार नइया लागे किनार।
प्यारे नंद के कुमार है पुकार दीनानाथ ॥९२॥
डरूँ अघ सुँ ताप वान नहीं तो, हैं विश्राम।

आके मेंटो अपार पाप मेरे दीनानाथ ॥९३॥
करो श्री शरण प्रदान कष्ट छूटे महान।
जो हो साँचे भवतार तो पधार दीनानाथ ॥९४॥
सदा सन्तों की चाह तुम्हारे थि श्रीगोपाल।
आके सोई कर कृपाल नंदलाल दीनानाथ ॥९५॥
हरे सच्चे गोविन्द आनिवार भौके फन्द।
वाँच्छ पूर्ण हो स्कन्द हे सुजान दीनानाथ ॥९६॥
जो हो साँचे अघ गंज हे मुकुंद भौके भंज।
करो दीनन मन चंग देके दर्श दीनानाथ ॥९७॥
तूहीं त्रिभुवन के थम्ह सुनो हे अव्यक्त ब्रह्म।
मेरे इष्ट हरो दम्भ जग्त ज्रंभ दीनानाथ ॥९८॥
भनें शिव विरंचि शारदा दिनेश शेष नाम।
प्रभो सर्व कारण्ड कार हे अनंत दीनानाथ ॥९९॥
अतुल महिमा तुम्हार श्रृजक कोटिक्र ब्रह्मारण्ड।
हो अखण्ड निर्विकार नेति नेति दीनानाथ ॥१००॥

सकें शेष वेद आदि नहीं महिमा बखान।
प्रभू कौतुक निधान विज्ञैवान दीनानाथ ॥१०१॥
करें कौन विधि बखान महा महिमा खदान।
गान ध्यान प्रेम शर्ण दान देहु दीनानाथ ॥१०२॥
जहाँ वेद श्रुति भोरान वहाँ कौन शक्तिवान।
नाम गान का प्रसाद चहे कीर्ति दीनानाथ ॥ १०३ ॥
सोई कर प्रदान रमाकंत दीन हेतकार।
पड़े द्वार आर्त शर्णदान देहु दीनानाथ ॥ १०४ ॥
श्रवण धारि आवो ह्वै रही विलम्ब दीनवंधु।
द्वन्द मेंटि सर्व देहु चर्ण अम्बु दीनानाथ ॥ १०५ ॥
तेरा सर्वाधिकार आर्त भार्त हेत की।
आवो स्वजनन सम्हालो सत्य कृत्य दीनानाथ॥ १०७ ॥
कीर्ति जीवन धन प्राण कृष्णचन्द्र मुरारी।
विनै वार वार देदो दर्श मेरे दीनानाथ ॥ १०८ ॥

१६

❀ विसर्जन की आर्ती ❀

आरती चरणन की दीनानाथ। प्रभो युग युग जन की न सनाथ ॥
भव भञ्जन दुख गञ्जन जन की। दर्श मोंद दीनानाथ ॥१॥ आरती चरणनकी दी०॥
बाँकी रहत न सुक्कृत येकौ। सुमिरत दीनानाथ ॥२॥ आरती चरणन की दी०॥
महिमा अतुल दर्श दम्पति छवि। राधावर दीनानाथ ॥३॥ आरती चरणन की दी०॥
कीर्ति वाँच्छ श्री दर्श पर्श पद सुफल करो दीनानाथ ॥४॥ आरती चरणन० ॥१०८॥

॥ विनय ॥

कृष्ण चन्द्र कीर्तिइष्टनिष्ठ चर्ण प्रेमिका।
करो संनिधी प्रदान पूर्ण वाँच्छ दीनानाथ ॥ ११० ॥
हूँ मैं करुणा निधान कि दया की इच्छुका।
आयो भारत जन कष्ट हरो विनै दीनानाथ ॥ ११० ॥

❀ इति ❀